Sangeet Galaxy e-Journal **UGC-CARE Listed**
Vol. 12, No.2 (July 2023) pp. 119-125 ISSN: 2319-9695

हिंदी फ़िल्म संगीत में सितार वाद्य की भूमिका

अमित यादव
शोधार्थी, संगीत एवं ललित कला संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
प्रो. अलका नागपाल (शोध निर्देशिका)
Email: theamityadavofficial@gmail.com

सारांश

हिंदी फ़िल्म संगीत में सितार वाद्य का अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है. संगीत विधा में वाद्यों की भूमिका अन्यतम है. फ़िल्म संगीत जगत में नए-नए वाद्यों का प्रयोग होता आया है. वर्तमान समय में तंत्री वाद्यों के अत्याधुनिकीकरण का सबसे बड़ा उदाहरण सितार वाद्य है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में तंत्री वाद्यों में अग्रगण्य तो है ही साथ ही साथ फ़िल्म जगत में भी इसकी मुख्य भूमिका रही हैं. वाद्य संगीत में स्वर तथा लय का स्वच्छंद तथा प्रभावपूर्ण प्रयोग देखा जाता है. कुछ विशेषज्ञों के अनुसार वाद्य-कला, गायन तथा नृत्य की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म एवम् अकृत्रिम आनन्द प्रदान करने वाली होती है. फिल्म संगीत के आने से पहले संगीत एवं वाद्य वादन शाही महफिलो व धनवानों की हवेलियों तक सीमित था तथा साधारण व्यक्ति की पहुँच वहाँ तक नहीं थी. फिल्म संगीत ने इस समस्या का समाधान किया. इस कार्य को करने में जिन महान संगीतकारों का योगदान रहा है, उनमें - रोशन, एस.डी. बर्मन, मदनमोहन, सी. रामचन्द्र, बसंत देसाई, शंकर-जयकिशन इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय है. इस शोध पत्र में हिंदी फ़िल्म संगीत के अंतर्गत सितार वाद्य के प्रयोग का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया हैं. फ़िल्म के अंतर्गत आने वाले अनेक गीतों में सितार की भूमिका को दर्शाने का प्रयास किया गया हैं. इस शोध में वर्णन किये गए फ़िल्म एवं उनके गीत प्राथमिक स्त्रोत के रूप में संकलित किये गए हैं. प्रस्तुत प्रपत्र में श्रव्य विधि द्वारा तथ्य संकलित किये गए है. इस शोध-पत्र में मुख्य रूप से सितार का हिंदी फ़िल्मी गीतों में प्रयोग एवं उसकी भूमिका पर चर्चा की जायेगी.

महत्वपूर्ण शब्द : हिंदी फ़िल्म, सितार, संगीत निर्देशक, संगीतकार, फ़िल्म संगीत, गीत.

How to cite this article:

Yadav, Amit. 2023. "Hindi Film Sangeet me Sitar Vadya ki Bhoomika." *Sangeet Galaxy* 12(2): 119-125. www.sangeetgalaxy.co.in.

फिल्मी संगीत सुगम संगीत के अन्तर्गत आता है. यह जन साधारण के बीच एक अत्यंत लोकप्रिय संगीत है. साधारण श्रोताओं से लेकर संगीत के प्रकांड पंडितों तक को फ़िल्मी संगीत ने प्रभावित किया है. मानव के मन को प्रभावित करने के जो साधन हैं, उनमें फ़िल्में बहुत महत्त्वपूर्ण रही हैं. इन फ़िल्मों में जो संगीत प्रयुक्त होता है, वह 'फिल्म-संगीत' कहलाता है. आज संगीत ही एक ऐसा माध्यम है जिस पर सम्पूर्ण फिल्म आधारित रहती है. एक समय था, जब फिल्मों में शास्त्रीय संगीत का ही प्रयोग किया जाता था परन्तु उसमे भी परिवर्तन आता चला गया. इस परिवर्तन की चरम परिणति इस रूप में हुई कि फिल्म संगीत में अनेक प्रकार के प्रयोग होने लगे और पाश्चात्य प्रवृत्तियाँ भारतीय संगीत पर

आच्छादित हो गई. "चित्रपट संगीत के युगल गीतों की प्रेरणा से शास्त्रीय वाद्य संगीत में युगल वादन प्रारंभ हुआ. फिर युगल गान (Duet) इतना प्रचलित हो गया है कि शास्त्रीय संगीत में सितार और सरोद एवं शहनाई और वायलिन की जुगलबंदी का आकर्षक प्रयोग देखने को मिलता है "[1]

हिंदी फ़िल्म संगीत में सितार वाद्य का प्रयोग सबसे पहले हमें 1913 में बनी फ़िल्म 'राजा हरिश्चंद्र' में देखने को मिलता है. इस फ़िल्म में सितार का भरपूर प्रयोग किया गया है. इस फ़िल्म के निर्माता दादासाहेब फालके थे. इनको चित्रपट का निर्माता भी कहा जाता है.[2] इसके बाद अनेक फ़िल्मी गीत आये जिनमें सितार का प्रयोग हुआ. 1936 में आई फ़िल्म 'अछूत कन्या' में भी सितार वाद्य का प्रयोग हमें सुनने को मिलता है. इसके बाद 1937 में 'किसान कन्या', 1946 में 'नीचा नगर' आदि प्रारंभ की कुछ फ़िल्मे थी जिनमें सितार का प्रचुर प्रयोग हुआ. सितार का प्रयोग जहाँ गीतों में किया गया है वहीं गीतों के अतिरिक्त भाव दर्शाने में भी सितार का प्रयोग किया जाता है जैसे रोने के दृश्य में अथवा विरह के दृश्य में तरबदार सितार पर अति मन्द्र में आलाप बजाया जाता है. चिन्ता के दृश्य में तरबदार सितार पर मध्य और तार सप्तक तक आलाप बजाया जाता है. नृत्य में शब्द न होकर केवल भाव होते हैं. नृत्य में भी तरबदार सितार का प्रयोग किया जाता है.

"फिल्म 'सरस्वती चन्द्र' में तरबदार सितार का प्रयोग बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है. प्रातः कालीन सूर्य उदय होने के साथ नभ की लालिमा धीरे-धीरे कैसे समाप्त हो रही है. सभी पक्षियों का चहचहाना व अपने घोंसले को छोड़कर अन्न की खोज में निकलना, उनके पैरों की फड़फड़ाहट, आदि को तरबदार सितार पर केवल तरबों के आरोही क्रम में छेड़ने से ही इस सारे भाव को प्रस्तुत किया जाता है अतः इस फिल्म में तरबों का बहुत महत्त्व है."[3] सिनेमा संगीत सर्वसुलभ है, अतः इसनें लोकरुचि को जागृत करने में बहुत सहयोग दिया है. पिछले चार दशकों में भारतीय हिन्दी फिल्मी संगीत बहुत बदला है. 1940 के दशक में के० एल० सहगल ने गीत गाए और जो गीत उसके प्रशंसकों को आज भी प्रसन्न करते हैं, तब संगीत निर्देशकों के पास वाद्य वृन्द के बहुत अधिक साधन नहीं थे. उनके वाद्य वृन्द में थोड़े से वादक होते थे - जैसे सितारवादक, बाँसुरी वादक और हारमोनियम वादक. इन थोड़े से यन्त्रों से उस समय के संगीतकार हतोत्साहित नहीं होते थे क्योंकि वे अपनी सारी रचना में ध्वनि पर जोर देते थे. उनका विशेष जोर गीतों की गुणवत्ता पर होता था जिसे वे संगीत में भरना चाहते थे. "संगीतकार व गायक अपनी कल्पना के अनुसार कुछ नई

चीजों का आविष्कार करते रहते हैं. इस तरह के नये-नये प्रयोगों से हमारे संगीत में रोचकता आती रहती है, यह निःसन्देह प्रशंसा के योग्य है."[4]

शास्त्रीय संगीत में कुछ प्रमुख कलाकारों ने सितार को फ़िल्मी गीतों के माध्यम से बुलंदियों पर पहुंचा दिया. इन सितार वादकों ने शास्त्रीय संगीत और सुगम संगीत दोनों विधाओं में सितार का प्रयोग किया. पंडित रविशंकर, उस्ताद विलायत खाँ, उस्ताद रईस खाँ, उस्ताद हलीम जाफ़र ख़ाँ आदि सितार वादकों का नाम प्रमुख है, जिन्होंने सितार वाद्य को फ़िल्मी संगीत में अलग स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया और इस वाद्य को अपनी अलग पहचान दिलाई. भारतीय फ़िल्म संगीत के महान संगीत निर्देशक मदन मोहन ने जितना सितार का उपयोग अपने संगीत में किया है इतना और किसी संगीतकार ने नहीं किया. इनकी फ़िल्मों में उस्ताद रईस खॉ ने सितार बड़ी सुंदरता से बजाया है जिसका वर्णन हम आगे चलकर करेंगे.

जाने-माने सितार वादक उस्ताद विलायत खां ने सत्यजीत राय की 'जलसा घर' के अलावा गुरु और कादम्बरी के लिए संगीत दिया था. उस्ताद विलायत खां न सिर्फ़ अपने सितार के लिए बल्कि अमृता प्रीतम के चर्चित उपन्यास 'धरती, सागर और सीपियां' पर आधारित 'कादम्बरी' के 'अम्बर की एक पाक सुराही, बादल का एक जाम उठाकर' (आशा) की कम्पोज़िंग के लिए भी जाने जाते हैं. वैसे तो फ़िल्म का पृष्ठभूमि संगीत भी गजब का था, और विलायत खान तथा शुजात खान के सितार, इमरत खान के सुरबहार, ज़रीन दारुवाला के सरोद, सुल्तान खान की सारंगी और शिवकुमार शर्मा के संतूर से सजे इस फ़िल्म के लुभावने पार्श्वसंगीत का भी एच.एम.वी. ने एक अलग एल.पी. ही निकाल दिया था. इस फ़िल्म में विभिन्न चरित्रों को उभारने के लिए विलायत खां ने अलग-अलग वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल किया था. कादम्बरी गायिका कविता कृष्णमूर्ति की भी प्रथम फ़िल्म थी और 'आएगा आने वाला' गीत उनके ही स्वर में था.[5]

विलायत खां एक बहुत ही प्रख्यात भारतीय संगीतकार थे, जिन्होंने कई फिल्मों में संगीत दिया है. उन्होंने अपने करियर के दौरान कई फिल्मों में सितार बजाए हैं. यहां कुछ उनकी प्रमुख फिल्में हैं : -

1. कभी कभी (1976)
2. तलाश (1969)
3. प्यासा (1957)
4. कागज के फूल (1959)
5. चौदहवीं का चाँद (1960)
6. पतंग (1960)
7. गंगा जमुना (1961)
8. मेरे मेहबूब (1963)

9. हमराज़ (1967)
10. वो कौन थी? (1964)
ये कुछ प्रमुख फिल्में हैं जिनमें विलायत खां ने सितार से संगीत दिया था.

संगीतकार मदन मोहन ने अपनी जिन फ़िल्मों में सितार का भरपूर प्रयोग किया है उनके कुछ नाम इस प्रकार है :-

अदालत -1958, देख कबीरा रोया - 1957, खजांची - 1958, अनपढ़ -1962, जहाँआरा-1964, पूजा के फूल - 1964, दुल्हन एक रात की - 1966, जब याद किसी की आती है - 1967, दस्तक - 1970, बावर्ची - 1972, हँसते जख्म -1973, दिल की राहे -1974, चौकीदार - 1974, मासूम - 1975 आदि और भी काफी सारी फ़िल्में मदन मोहन ने बनाई जिनमें उन्होंने सितार का प्रयोग किया हैं.[6]

भारत रत्न पंडित रवि शंकर ने इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) की फिल्म ‘धरती का लाल’ में पहली बार अपना संगीत दिया. संगीतकार मदन मोहन के अधिकांश फ़िल्मी गीतों में उस्ताद रईस खान ने सितार बजाया, जो इंदौर से ताल्लुक रखते थे. 1967 में आई फिल्म 'दुल्हन एक रात की' के गीत 'मैंने रंग ली आज चुनरिया सजना तोरे रंग में' सितार का बेहद खूबसूरत वादन किया गया था. नौशाद, शंकर-जयकिशन, मदन मोहन, एसडी बर्मन, वसंत देसाई, सी. रामचंद्र और आर.डी. बर्मन जैसे पहले के अधिकांश संगीतकारों ने भारतीय रागों का मुख्य रूप से उपयोग किया, और जहां भी संभव हो सका सितार का प्रयोग किया गया हैं. सितार वादकों में अब्दुल हलीम जाफर खान और रईस खान ने 50 और 60 के दशक में अनेक फिल्मी गाने बजाए हैं. जबकि रईस खान ने मुग़ल-ए-आज़म, झनक झनक पायल बाजे , गूंज उठी शहनाई और कोहिनूर फ़िल्मों में अभिनय किया है, रईस ख़ान ने हंसते ज़ख़्म, हमसाया, आम्रपाली और कई अन्य फ़िल्मों में अभिनय किया है. पं. रविशंकर जी ने फिल्म 'अनुराधा' के लिए संगीत तैयार किया था और इस फ़िल्म के गीतों में सितार का बहुत सुंदर प्रयोग किया था. उन्होंने रिचर्ड एटनबरो की 'गांधी' के संगीत में भी प्रमुखता से इस वाद्य यंत्र का इस्तेमाल किया. "पंडित रवि शंकर के अलावा आफताब-ए-सितार से सम्मानित सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खां ने अपने सहयोगियों बेगम अख्तर और रोशन कुमारी के साथ मिलकर राय की संगीत प्रधान फ़िल्म 'जलसा घर' में अपने संगीत से दर्शकों को मनोरंजित किया."[7]

"हलीम जाफ़र ख़ाँ और जयराम आचार्य की ही तरह रईस ख़ाँ साहब का भी फ़िल्म संगीत में महत्वपूर्ण योगदान रहा. 1964 की फ़िल्म ’ग़ज़ल’ की ग़ज़ल “नग़मा-ओ-शेर की सौग़ात किसे पेश करूँ” में उस्ताद रईस ख़ान के सितार के टुकड़ों ने इस ग़ज़ल को अमर बना दिया. इस गीत में सारंगी और वायलिन तो थे ही, पर सबसे ज़्यादा प्रॉमिनेन्स ख़ाँ साहब के सितार को ही मिला. 1966 की फ़िल्म ’मेरा साया’ में तो जैसे ख़ाँ साहब का सितार अपने पूरे शबाब पर था. “नैनों में बदरा छाये” का शुरुआती संगीत से भला कौन अंजान है. संतूर पर सितार के चमत्कारी तानें हावी हो जाती हैं और फिर सितार पर शुरुआती धुन बजने के बाद गीत शुरु होता है “नैनों में बदरा छाए, बिजली सी चमके हाए”. इस

गीत में भी क्या ख़ूब संतूर और सितार की जुगलबन्दी है, जैसे कोई स्वर्गिक अनुभूति हो रही हो!"[8]1967 में आई फ़िल्म 'दुल्हन एक रात की' के गीत "मैंने रंग ली आज चुनरिया सजना तोरे रंग में" में ख़ाँ साहब के सितार का जादू सुनाई देता है. इस गीत के बीच-बीच में और अन्त में भी सितार के खंड हैं, और अन्त में तो गीत के मुखड़े की धुन ही सितार पर बजती है. इसी फ़िल्म का अन्य गीत है "सपनों में अगर तुम मेरे आओ तो सो जाऊँ" लता जी की आवाज़ में इस लोरी की शुरुआत ख़ाँ साहब के सितार से होती है. इस गीत में सितार के साथ-साथ अन्य वाद्यों का भी प्रयोग हुआ है. 1967 की फ़िल्म 'नौनिहाल' की ग़ज़ल "तुम्हारी ज़ुल्फ़ के साये में शाम कर लूँगा" के बीच-बीच में क्रम से वायलीन, सारंगी और सितार के टुकड़े सुनाई पड़ते हैं, जिनमें सितार वाला हिस्सा सबसे लम्बा हैं.

1961 की फ़िल्म 'गंगा जमुना' में नौशाद साहब का संगीत था. लता जी की आवाज़ में "ढूंढ़ो ढूंढ़ो रे साजना मोरे कान का बाला" में सितार गीत का मूड तैयार कर देता है. इस गीत में बांसुरी के साथ सितार का संगम भी बेहद दिलकश व लोकप्रिय रहा. पुरानी फिल्मों में हमें प्रायः सितार के छोटे-छोटे टुकड़े सुनने को मिलते हैं जो उस दृश्य के भाव से संबंधित हों. जैसे— खुशी के किसी दृश्य में तेज़ गति का खिलखिलाता सितार वादन एवं गम के दृश्य में गंभीर सितार वादन. खुशी या मन को प्रफुल्ल करने के दृश्य में तेज तानें एवं झाला का प्रयोग होता है एवं गंभीर दृश्य के लिए आलाप एवं धीमी गति का सितार वादन किया जाता है.

ओ. पी. नय्यर ने हिंदी फ़िल्मों में भारतीय वाद्यों का बहुतायत में प्रयोग किया. 1962 की फ़िल्म 'एक मुसाफ़िर एक हसीना' का गीत "आप यूंही अगर हमसे मिलते रहे, देखिए एक दिन प्यार हो जाएगा" में सारंगी और सितार का एवं 1964 की फ़िल्म 'कश्मीर की कली' में गीत "इशारों इशारों में दिल लेने वाले" में नय्यर साहब द्वारा ख़ाँ साहब के सितार से इस गीत को सजाया गया. इस गीत के अन्तरालों में सितार और घुंघरू का एक साथ प्रयोग हुआ है. "सजनवा बैरी हो गए हमार" गीत में सितार की आवाज़ ने जो दर्द पैदा की थी, उससे गीत के भाव, गीत के बोलों और गायकी को बहुत प्रशंसा प्राप्त हुई.

संगीतकार जोड़ी कल्याणजी-आनन्दजी ने भी सितार को अपने गीतों में जगह दी. 1968 की फ़िल्म 'सरस्वती चन्द्र' के यादगार गीत "चंदन सा बदन चंचल चितवन" के शुरुआती संगीत में सितार की रचना इस गीत की पहचान और विशेषता है. इस गीत के दो संस्करण हैं और दोनों में उन्होंने अलग अलग तरीक़े से सितार के सुरों को पिरोया है.

70 के दशक में अपने गीतों की खूबसूरती बिखेरने वाले संगीतकारों में एक नाम लक्ष्मीकान्त-प्यारेलाल का है. उस समय 'सत्यम शिवम सुन्दरम' फ़िल्म के अनेक गीतों में सुमधुर सितार की ध्वनियाँ शहद घोलती हुई नज़र आती है.[9] 1978 की फ़िल्म थी 'बदलते रिश्ते' और इसमें लक्ष्मीकान्त-प्यारेलाल ने अपने संगीत से इस फ़िल्म को सजाया था. इसमें लता मंगेशकर और महेन्द्र कपूर का गाया एक शास्त्रीय संगीत आधारित रचना थी "मेरी साँसों को जो महका रही

है" गीत के पहले अन्तराल संगीत में अगर संतूर है तो दूसरे अन्तराल में मुख्यत: वायलिन है, लेकिन तीसरे अन्तराल में सितार की लहरियाँ जैसे गीत का रुख़ ही मोड़ देती हैं.

निष्कर्ष : फ़िल्म संगीत में ही नहीं, अपितु सितार वाद्य का प्रयोग अनेक धारावाहिक नाटकों में भी किया गया हैं. रामायण, श्री कृष्णा इत्यादि धारावाहिक में भी सितार वाद्य का भरपूर उपयोग किया गया. सितार वाद्य को ऊंचाई पर पहुंचाने में हमारे उस समय के संगीतकारों और उस समय के सितार वादकों का बहुत बड़ा योगदान रहा है.वर्तमान समय में सितार का काफी अधिक प्रयोग हिंदी फ़िल्म संगीत में किया जा रहा है. वर्तमान समय में फ़िल्मों में निलाद्री कुमार का और पंडित सुनील दास का सितार सुनने में मिलता है. हिंदी फ़िल्म संगीत में सितार वाद्य का उपयोग अनेक संगीतकारों ने अपनी फ़िल्मों में किया है.तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हुए कुछ ऐसी धुनों की रचना हुई जिनमें विभिन्न स्वर मेल व लय के प्रयोग से एक अद्भुत नवीनता, मादकता व हृदय पर प्रभाव डालने की शक्ति आ गई. हिन्दी फिल्म संगीत को अधिकाधिक विकसित करने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न किए गए. यही संगीत परम्परा सितार की बढ़ती लोकप्रियता में आलाप से लेकर झाले तक का रसानुकूल प्रयोग ने सिने जगत में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया.

सन्दर्भ:

1. चौबे, सुशील कुमार. *हमारा आधुनिक संगीत*. उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पब्लिकेशन, लखनऊ, 2018, पृ. 121
2. https://youtu.be/3Zevm0Zjc-k , Time 12:10, Date: 26/03/2023
3. ठाकुर, बन्दना. *तरबदार सितार की उत्पत्ति विकास एवं महत्व*. नई दिल्ली: कनिष्क प्रकाशन, 2009, पृ.133
4. चौधरी, सलिल, *आज का फिल्म संगीत*. हाथरस प्रकाशन, जनवरी, 1967 पृ० 4
5. https://www.bhaskar.com/magazine/rasrang/news/such-classical-players-who-composed-unmatched-music-in-films-129051876.html Time 21:58, Date: 23/04/2023
6. जौहरी, सीमा. *फ़िल्म संगीत निर्देशक रोशन व उनके समकालीन संगीतकार*. नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन, 2002, पृ. 125
7. Kumar, Vikas. "Hindustani Shstriya Sangeet ke Aaine me Satyajit Ray ki Filme". *Sangeet Galaxy*. Vol.12, No. 1, January 2023, p. 124, (ISSN: 2319-9695)
8. https://radioplaybackindia.com/2017/05/18.html , Time 23:06, Date: 27/03/2023
9. विमल. *हिंदी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास*. संजय प्रकाशन, नई दिल्ली: 2010, पृ० 140

Webliography:

1. 'मैंने रंग ली आज चुनरिया सजना तोरे रंग में - https://youtu.be/zWjjKoE-9aY
2. नग़मा-ओ-शेर की सौग़ात किसे पेश करूँ - https://youtu.be/nJcJeqMcil0

3. नैनों में बदरा छाये - https://youtu.be/66chtB-ygrw
4. सपनों में अगर तुम मेरे आओ तो सो जाऊ - https://youtu.be/RVO2B_OXVPg
5. तुम्हारी ज़ुल्फ़ के साये में शाम कर लूँगा - https://youtu.be/U6zOPOhx_Zk
6. ढूंढ़ो ढूंढ़ो रे साजना मोरे कान का बाला" - https://youtu.be/9x9eBbo7E3o
7. आप यूंही अगर हमसे मिलते रहे - https://youtu.be/qioETsK20Rc
8. इशारों इशारों में दिल लेने वाले - https://youtu.be/zNsNuCitZys
9. सजनवा बैरी हो गए हमार" - https://youtu.be/GEBReo4aX8U
10. चंदन सा बदन चंचल चितवन - https://youtu.be/O_ZFtaonBPQ
11. मेरी साँसों को जो महका रही है - https://youtu.be/brJmK-nbN7Y